मानसतरंगिणी
तरंग १

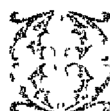
सवेरा

लेखक—
भगवत शरण उपाध्याय, एम्० ए०
(काशी विश्वविद्यालय)

प्रकाशक—
सरस्वती-मन्दिर
जतनबर, बनारस।

प्रथमबार १०००] १९४० [मू

पुस्तक विक्रेता
नन्दकिशोर, ऐण्ड ब्रदर्स,
चौक, बनारस सिटी :



मुद्रक—
बजरंगबली 'वि·
श्रीसीताराम प्रेस, जालिप

वक्तव्य

प्रस्तुत कहानियों का विषय नवीन और असामान्य है। मानव - जाति (भारतीय) का प्राथमिक इतिहास—विशेषकर सामाजिक—इनका आधार है, प्राचीन भारतीय संस्कृति का अंकन इनका उद्देश।

लेखक का विचार भारतीय संस्कृति पर कहानियों की सिरीज लिखने का है। यह सिरीज दस भागों में समाप्त होगी। प्रस्तुत संग्रह उसका प्रथम भाग है जिसका काल मानव-जाति के शैशव से ऋग्वेद तक है। शेप भाग क्रमशः निम्नलिखित होंगे—(२) ब्राह्मण-उपनिषद् ग्रन्थों के आधार पर; (३) और (४) जातक-कथाओं से; (५) और (६) महाभारत और पुराणों से; (७) बृहत्कथा-मंजरी आदि के आधार पर; (८) पञ्चतन्त्र, राजतरंगिणी आदि से; (९) शिशुनाग, मौर्य, अंध्र, शुंग, कण्व, वाह्लीक-यवन शक-कुषाण, नाग-वाकाटक, गुप्त, मौखरि, भूति, राष्ट्रकूट आदि हिन्दू राज्यकाल से; और (१०) मुस्लिम तथा बृटिश-काल से।

प्रस्तुत संग्रह पर कुछ आवश्यक वक्तव्य है। इसकी कहानियों की संख्या दस है। भाषा प्राचीन संस्कृति के अनुरूप है और विचार, प्लाट आदि भी तद्विषयक और तत्कालीन हैं। लिखने के पूर्व कहानियों के कथाप्रसंग विशेष प्रयास से स्थिर नहीं किए गए। इसी कारण अधिकतर ये भावात्मिका हो गई हैं। ऋग्वेद के एकाध मंत्र किसी किसी कहानी के आधार हैं। कथानक अधिक-तर कहानी प्रारम्भ करने के बाद अपने आप बनता गया है—

उत्तरवाक्य पूर्ववाक्य से स्वयं प्रसूत होता गया है। इसी कारण प्रत्येक कहानी के लिखने में ढाई से साढ़े तीन घंटों तक का समय लगा है, एक कहानी एक बैठक में समाप्त हुई है और कुल दस दिनों में लिखी गई हैं।

कहानियों के विषयप्रसंग का आरम्भ मानव-शैशवकाल और अन्त ऋग्वेद का उत्तरकाल है। कुछ कहानियों में नायक-नायिकाओं और अन्य पात्रों का स्थान देवताओं ने लिया है। यह विधान लेखक का नहीं; स्वयं ऋग्वेद का है। सुरों और मानवेतर व्यक्तियों की कल्पना उसी प्रकार हुई है जिस प्रकार ऋषियों ने की थी। हाँ, कहानियों में कथाभाग की कल्पना लेखक की है। उनमें भावों का संघर्ष विशेष है जो ऋग्वेदकालीन जीवन का प्राण था।

विषय नवीन है, क्षेत्र अनजाना। पता नहीं लेखक कहाँ तक सफल हुआ है और होगा। फिर भी यदि साहित्यिकों ने इस संग्रह को अपनाया तो निस्सन्देह वह उनका आभारी होगा और यह प्रोत्साहन उसे उसके मनोनीत पथ पर अग्रसर करेगा।

समय समय पर इस कार्य में लेखक को काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यापक श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र, एम० ए०, द्वारा बड़ा प्रोत्साहन मिला है, अतः वह उनका कृतज्ञ है।

काशी विश्वविद्यालय,
शिवरात्रि, ७—३—४० } भगवत शरण उपाध्याय

गतिमती मानवता का इतिहास
उद्भ्रान्त विकल मानव को—

सूची


सबेरा